सत्यशोधक समाज

संस्थापक -- महात्मा ज्योति राव फूले
स्थापना -- **24 / 09/ 1873**
स्थल -- पुणे

'सत्यशोधक समाज' महात्मा फुले द्वारा स्थापित एक क्रांतिकारी पंथ है। 'सत्यशोधक' का अर्थ है 'सत्य की खोज करने वाला समाज।' भारतीय समाज को आगे बढ़ाने के लिए, उनमें जनजागृति लाने के लिए 24 सितंबर 18 73 को सत्यशोधक समाज की नींव रखी गई। सामाजिक न्याय की दिशा में यह एक बड़ा कदम था।19 वी शताब्दी के मध्य में प्रमुखतया तीन प्रवाह मिलते थे। पहला प्रवाह धार्मिक सुधार चाहने वालों का था। इनमें महादेव गोविंद रानडे,विठ्ठल रामजी शिंदे राजा राम मोहन राय इत्यादि सुधारक अग्रणी थे। दूसरा प्रवाह बुद्धिवादी ब्राह्मण सुधारकोंका था इनमे आगरकर जैसे सुधारक थे। तीसरा प्रवाह ब्राह्मणी संस्कृति के खिलाफ विद्रोह करनेवाला बहुजनों का था। इसके जनक महात्मा ज्योतिराव फुले थे। महात्मा ज्योतिराव फुले का जन्म पुणे में 1827 में हुआ था। उनकी माता का नाम चिमणाबाई पिता का नाम गोविंदराव था। ज्योतिबा मात्र 9 महीने के थे तभी उनकी मां स्वर्गवासी हुई। माता के प्रेम से वंचित ज्योतिबा को बचपन से ही अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। ज्योतिबा तेज बुद्धि होने के कारण स्कूल में के भी विद्यार्जन करने में अग्रेसर रहें। ग्रामची इस प्रसिद्ध तत्ववेत्ताने उन्हे 'सैद्रीय बुद्धिवंत' संबोधित किया था।

सत्यशोधक समाज का मुख्य उद्देश्य ब्राह्मणवाद और उसकी कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाना था । इन्होंने मूर्ति पूजा, कर्मकांड, पुजारियों के वर्चस्व, कर्म, पुनर्जन्म और स्वर्ग के सिद्धांतों का विरोध किया। साथ ही सत्यशोधक समाज जातिवादी भेदभाव को मिटाना वह महिलाओं को समान अधिकार दिलवाना चाहता था।

सत्यशोधक समाज की विचारधारा और कार्य

एकेश्वर धारणा : - ईश्वर एक है। वह सर्वव्यापी, निर्गुण और सत्य रूप है समस्त मानव जाति उसकी संतान है। ईश्वर की आराधना करने का अधिकार हर व्यक्ति को है। माता पिता को संतुष्ट करने के लिए जिस तरह किसी व्यक्ति की जरूरत नहीं होती वैसे ही ईश्वर भक्ति के लिए दलालों की आवश्यकता नहीं होती।

जाति व्यवस्था का विरोध : - सत्यशोधक समाज का जाति व्यवस्था पर विश्वास नहीं था। चातुर्वर्ण्य व्यवस्था उन्हे स्वीकार नहीं थी। उनकी धारणा थी कि 'मनुष्य जाति से श्रेष्ठ नहीं होता वह तो गुणों से श्रेष्ठ होता है।'
सत्यशोधकों का यह दृढ़ विश्वास था कि जाति प्रथा को तोड़ने का बेहतरीन उपाय अंतरजातीय विवाह है। उन्होंने अंतरजातीय विवाह करने वालों को अपना पूरा सहयोग और समर्थन दिया। महात्मा फुले ने अस्पृश्यों कि वेदना देखकर 'अस्पृश्यांची कैफियत' कैफियत ग्रंथ लिखा। जो अप्रकाशित है।

धार्मिक कर्मकांड का विरोध : - सत्यशोधक समाज ने धर्म के नाम पर किए जाने वाले कर्मकांड पर कड़ा तीखा प्रहार किया। मूर्ति पूजा उन्हे मान्य नहीं थी। यज्ञ, भोग चढ़ाना, आदि सब क्रिया कलापों को उन्होंने त्याग दिया।

ब्राह्मणी वर्चस्व पर आघात : - ब्राह्मण वर्ग ईश्वर मानव के बीच दलाल का काम कर रहा था। यथार्थ रूप में ब्राह्मण दलाल था। अपने फायदे के लिए भोली भाली जनता को फसाते थे। धार्मिक

By Dr. Sangita Chitrakoti

कार्य करने की जिम्मेदारी उन्हीं की थी। सत्यशोधकों ने धार्मिक विधि-विधान से ब्राह्मणों को हटाने का प्रयास किया। बहुजन समाज को उन्होंने आवाहन किया कि "हम भी धार्मिक विधि, ,विवाह, आदि समारोह कर सकते हैं। अतः उन्होने धार्मिक विधि विधान ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिए जनता को प्रेरित किया और ब्राह्मणों की गुलामगिरी से कनिष्ठ वर्ग को मुक्त करने का प्रयास किया।

विवाह पद्धति में परिवर्तन : -
जो सदस्य होता था उसे सत्यशोधक समाज के नियमानुसार विवाह करना पड़ता है इसमें ना बारात में ब्राह्मण पूजा विधि बैंड बाजा दुल्हन निष्ठा से एक साथ रहने का वचन ले लेते। ज्योतिबा फुले द्वारा शपथ दी जाती है। विवाह के समय दी जाने वाली प्रतिज्ञा ज्योतिराव फुले ने खुद लिखी थी। इस प्रतिज्ञा में वधू यह मांग करती थी कि 'उसके साथ सम्मान पूर्ण व्यवहार हो।' और वर द्वारा यह आश्वासन दिया जाता था कि वधू की मांग को वह पूरा करेगा। इसके बाद दोनों मिलकर वह शपथ लेते थे कि वह जरूरतमंदों और दलितों की भलाई के लिए अपनी जिंदगी या समर्पित करेंगे। फिर सभी का शुभ आशीर्वाद लेकर विवाह संपन्न हो जाता। कुछ भी खर्चा नहीं। प्रतीकात्मक रूप में पान सुपारी का ही खर्चा ही होता था। पहला सत्यशोधक विवाह सीताराम जाबाजी अलहत व मंजूबाई निंबालकर के बीच सम्पन्न हुआ था।

किसानों कनिष्ठ वर्ग का उद्धार :- सत्यशोधक समाज का अध्ययन किसान और कनिष्ठ वर्ग का उद्धार करना उनके विचार और कार्य भी उसी वर्ग के प्रश्नों से संबंधित थे जैसे सत्यशोधक समाज की ओर से निबंध स्पर्धा का आयोजन किया गया जिसका विषय था ,खेती में संशोधन कैसे कर सकते हैं?' विषय से ज्ञात होता है कि सत्यशोधक समाज का कार्य कितना विधायक था।

- स्त्री मुक्ति के लिए अहम कदम : --

स्त्री शिक्षा : - महात्मा ज्योतिरव फुले स्त्रीवादी थे। भारतीय स्त्री की दयनीय दशा देखकर उन्हे ये एहसास हुआ कि महिलाओं को शिक्षा देना,उनकी मेधा को जगाना, उन्हे वह सम्मान देना आवश्यक है जिसकी वह अधिकारीनी है। अपने इस विचार का प्रारम्भ उन्होने अपने घर से किया। स्त्री मुक्ति की दिशा में उनका पहला कदम था अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को पढ़ाना। जब महात्मा फुले मिशनरी स्कूल में पढ़ रहे थे तभी से उन्होंने सावित्रीबाई और अपनी मौसी सगुनाबाई को पढ़ाना शुरू कर दिया था। सावित्रीबाई फुले एक मेधावी विद्यार्थीनी थी। आगे चलकर सावित्रीबाई ने 'शिक्षक प्रशिक्षक' प्रमाण पत्र हासिल किया। फुले दंपति ने लड़कियों के लिए अपना पहला स्कूल 15 मई 1848 को पुणे के भिड़े वाड़ा में शुरू किया। सावित्रीबाई इस स्कूल की प्रधानाचार्य थी। स्कूल में सभी जातियों की लड़कियां एक छत के नीचे पढ़ती थी। उसी साल अछूत लड़कियों के लिए भी एक स्कूल शुरू किया गया। अगले 4 सालों में फूले दंपति ने महिलाओं के लिए 18 स्कूल शुरू किए। ज्योतिराव फुले की यह मान्यता थी कि समाज उत्थान के लिए महिला शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। उनका एक प्रसिद्ध वचन है ... " जिच्या हाती पालण्याची दोरी ती जगाला उध्दारी" अर्थात झूले कि रस्सी जिसके हाथ में है वह सारे विश्व का उध्दार कर सकती है। ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने अल्पसंख्यक वर्ग के स्त्रियों को भी शिक्षित करना जरूरी माना। फातिमा शेख जो उनके ही स्कूल की छात्रा थी उसे अपने एक स्कूल में अध्यापिका बनाया। उसे देश की पहली मुसलमान अध्यापिका होने का गौरव प्राप्त है। राष्ट्र उत्थान में परिवर्तन और सामाजिक न्याय के लिए धर्मनिरपेक्ष सोच भी जरूरी थी। सामाजिक न्याय की यह लड़ाई तभी सफल होगी जब सभी जाति और धर्म की स्त्री शिक्षित होगी।

By Dr. Sangita Chitrakoti

बाल हत्या प्रतिबंधक गृह खोला : - बाल विवाह के कारण किशोरावस्था में ही कई लड़कियां विधवा हो जाती थी। विधवा होने के बाद उनका सामाजिक और यौन जीवन समाप्त हो जाता था। परंतु विडंबना यह थी कि परिवार के अन्य पुरुषों के हाथों उसका शारीरिक शोषण होता था। अगर वह शारीरिक शोषण के कारण गर्भवती हो जाती तो उसे बदनामी झेलनी पड़ती थी। उसके पास जान देने के सिवा कोई रास्ता नहीं था। इस स्थिति से द्रवित होकर फुले दंपति ने सन 18 63 में अपने घर के दरवाजे गर्भवती बाल विधवाओं के लिए खोल दिए। उन्होंने ब्रह्मणवाड़ा में बड़े-बड़े पोस्टर लगाए जिसमें उन्होंने बाल विधवाओं से सीधे अपील की कि वह गर्भवती हो जाए तो सीधे फुले दंपति के घर आ कर रहे वही अपने बच्चों को जन्म दें। फुले दंपति का यह सहानुभूति पूर्ण निर्णय समाज सुधारकों से एकदम अलग था जो उन्हें सबसे ऊंचा उठा देता है।

श्रमिक महिला आंदोलन को समर्थन : - सत्यशोधक समाज ने मुंबई की महिला श्रमिकों के महिला श्रमिक के तौर पर दमन के विरुद्ध संघर्ष को समर्थन दिया। सन 1893 की 25 मार्च को जेकब मिल की 400 महिला श्रमिकों ने अपने पुरुष अधिकारियों के खिलाफ आंदोलन शुरू किया। अपने अधिकारों के लिए भारतीय महिला श्रमिकों का पहला प्रेरित आंदोलन था।

निष्कर्ष : - सत्य शोधक समाज के द्वारा महात्मा ज्योतिबा फुले ने भारतीय समाज को जागृत किया। सैकड़ो साल उन्होने जो सामाजिक परिवर्तन की लड़ाई लड़ी उसी के कारण आज देश का बहुजन वर्ग इंसान बनकर जी रहा है। सती प्रथा, बाल विवाह, पुनर्विवाह निषेध जैसी कुरीतियों का सत्यशोधक समाज ने बहिष्कार किया। स्त्री शिक्षा से वंचित थी उसके लिए शिक्षा के द्वार खोल दिये। आज स्त्री सम्मान के साथ जी रही है उसका श्रेय ज्योतिबा फुले और सावित्री माई फुले को जाता है। ज्योतिबा और सावित्री माई फुले समाज के सशक्त प्रहरी थे। उन्हे सदैव याद रखा जाएगा।

By Dr. Sangita Chitrakoti